।। नया जन्म लेती नारी ।।

उपाध्यायान्दशार्चाय आचार्याणां शतं पिता । सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते ।।

मनु कहते हैं - एक सामान्य शिक्षक की तुलना में कोई भी बालक वेद के आचार्यो से दस गुना अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकता हैं । इसलिये वेद के आचार्य सामान्य शिक्षक से दस गुना अधिक सम्माननीय हैं । वंही वेद के आचार्यो से सौ गुना अधिक कोई बालक अपने पिता से ज्ञान प्राप्त कर सकता हैं । इसलिये वेद के आचार्यो से सौ गुना अधिक सम्माननीय पिता हैं, परन्तु कोई भी बालक अपने पिता की तुलना में हजार गुना अधिक अपनी माता से ज्ञान प्राप्त कर सकता हैं । इसलिये पिता से भी हजार गुना अधिक माता सम्माननीय हैं । माता एक नारी हैं और एक नारी ही माता बनती हैं । मातृत्व का नारी को ईश्वरीय वरदान प्राप्त हैं । इसलिये वो सर्वोच्च सम्मान की अधिकारी हैं । ये हमारे शास्त्रों की नारी के लिये परिभाषा हैं ।

इसके बाद भी भारतीय नारी की ये विडम्बना रही हैं कि जब वो दुल्हन बनकर पती के घर आती हैं तो तब तक स्वीकार नही की जाती हैं, जब तक कि वो पुत्र को जन्म नही दे देती हैं । पुत्र के जन्म के बाद वह बहुत सम्माननीय हो जाती हैं और इसी वजह से उसका अत्याधिक ध्यान उस पुत्र पर ही केन्द्रित हो जाता हैं जिसके कारण वो सम्माननीय बन जाती हैं । फिर जैसे जैसे पुत्र बड़ा होता जाता हैं माँ के अधिक करीब और पिता से दूर होता जाता हैं । इससे दो व्यक्तित्व एक साथ त्रुटीयुक्त हो जाते हैं । एक ओर वो पिता का व्यक्तित्व जो पुत्र से बढ़ती दूरी को विशेष दृष्टिकोण से देखने लगता हैं जिसमें क्रोध और ईर्ष्या पनपने लगती हैं । एक ओर वो पुत्र का व्यक्तित्व जो माता के विशेष स्नेह के कारण स्वंय से अधिक प्यार करने लगता हैं और जिससे धीरे धीरे उसमें दम्भ पनपने लगता हैं । उसके व्यक्तित्व में माता के स्नेह का अधिक योगदान होता हैं और उसका व्यक्तित्व माता की सोच के अनुसार ढलने लगता हैं । परिणाम स्वरुप पिता-पुत्र का टकराव प्रकट होता हैं । जिससे फिर किसी एक में अथवा दोनो में एक नयी त्रुटी, हीनभावना जन्म लेने लगती हैं । जब एक त्रुटी से दूसरी त्रुटी से मिलने लगती हैं तो फिर त्रुटियों का अंबार लगने लगता हैं । ये एक मनोवैज्ञानिक तथ्य हैं । इसके बाद जीवन कड़वाहट में बदलने लगता हैं और ये सब होता हैं केवल इस मलिन विचारधारा के कारण कि हम नारी को सहज ही स्वीकार करना नही चाहते हैं ।

बहरहाल अब इसमें बदलाव आ रहा हैं । भारतीय समाज में अब आर्थिक लक्ष्य विशेष स्थान ग्रहण करने लगे हैं । अब महिलायें घर से बाहर निकल आयी हैं और काम करने लगी हैं । इससे घर परिवार अब साधन संपन्न होने लगे हैं और हमारा देश भी आर्थिक रुप से सुदृढ़ होने लगा हैं । कामकाज से बाहर रहने वाली महिलायें अब घर में बच्चों को अधिक समय नही दे पाती हैं । उनका मन बाहर रम जाता हैं और पुत्र पर स्नेह केन्द्रित करने का ख्याल क्षीण होता जा रहा हैं इससे भारतीय पुरुष अपने व्यक्तित्व का स्वयं निर्माण कर सकेगें । हालाकि ये एक व्यवहारिक तथ्य हैं क्योंकि इससे अच्छे बुरे दोनो ही तरह के व्यक्तित्वों का निर्माण होगा परन्तु तैरना सीखने वालों में से कुछ डूब भी जाया करते हैं । जो भी हो पुरानी परम्पराओं और त्रुटियों के समापन का समय आ पहुचा हैं ।

सब मिलाकर जो विश्लेषण हैं वो ये कि भारतीय समाज एक प्रसव पीड़ा से गुजर रहा हैं जिससे एक नयी नारी का जन्म होना हैं । ये नारी कामकाजी , आकर्षक और बुध्दीमान होगी । इसे सहज ही स्वीकार कर लिया जायेगा, इसके लिये सम्मान और आत्म निर्भरता की सुविधायें उपलब्ध रहेगी । इसे पुरुषों की तुलना में समान अधिकार मिलेगें, अब पुरुष इसे अपनी दासी नही बना सकते हैं, अब इसे पुरुष संतान पैदा करने की मजबूरी भी नही रहेगी । एसे भी वर्तमान समय में पुत्र की चाहत ने पुरुष संतान की तुलना में स्त्री संतान का अनुपात घटा दिया हैं । डर इस बात का पैदा हो गया हैं कि घटती स्त्री संतान कलको पुरुषों को इस बात के लिये मजबूर ना कर दें कि विवाह के लिये ईच्छित पुरुष, मनपंसद स्त्री को दहेज देना आरंभ कर दे ।

बहरहाल समाज प्रसव पीड़ा में व्यस्त हैं और नयी नारी का जन्म हो रहा हैं एसे में पुरुषों के लिये कुछ होना अभी निश्चत नही हैं । एसे में कुछ पुरुष नयी नारी के जन्म की प्रसन्नता भी व्यक्त कर रहे हैं । जैसे घर में कन्या का जन्म हो तो वे कहते हैं कि 'लक्ष्मी का जन्म हुआ हैं ।' परन्तु कुछ पुरुष नाराज भी हैं और कुछ कर नही पा रहे हैं कुछ हैरान से भी हैं कि सोचा था पुत्र होगा परन्तु अचानक पता चला कि कन्या हो गई हैं । अब वे कुछ भौचक्के से हैं कुछ नशे की सी हालत में हैं और समझ नही पा रहे हैं कि अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करें जैसे एक व्यक्ति कुछ कुछ नशे में खोया हुआ धीरे धीरे सड़क पर से जा रहा था । उसके हाथ में एक बक्सा था, जिसके ढक्कन और बाजुओं में छेद थे । एसा लगता था मानो वो किसी जिवित प्राणी को ले जा रहा हो । रास्ते में एक परिचित मिल गया । उसने रोककर पूछा, 'तुम्हारे इस बक्से में क्या हैं ?'

नशे की झोंक में उसने उत्तर दिया, 'इसमें एक नेवला हैं ।'

'भला किसलिये ?'

'तुम तो जानते ही हो मेरी आदत कैसी हैं । अभी मैं पुरी तरह से नशे में नही हुँ, पर जल्दी ही हो जाऊँगा । जब मैं पुरा मदहोश हो जाता हुं तो चारो तरफ मुझे साँप ही साँप नजर आते हैं । तब मुझे डर लगता हैं । इसलिये मैं नेवला लिये जा रहा हुँ, ताकि साँपों से मेरी रक्षा हो सके ।'

'ओहो ! पर तुम्हारे ये साँप तो काल्पनिक हैं ।'

'हाँ, पर मेरा ये नेवला भी काल्पनिक हैं ।'

वास्तव में बक्सा खाली था । वैसे ही नयी नारी के जन्म से उन डरने वाले हैरान और भौचक्के पुरुषों का भी अंतर्मन खाली हैं । वो अपने ही बनाये हुए काल्पनिक प्रश्नोतरों के साँपों से डरे हुऐ हैं ।

इस तरह प्रसव पीड़ा में व्यस्त हमारा समाज जंहा नयी नारी को जन्म देने वाला हैं । वंही एक बड़े बदलाव से भी गुजर रहा हैं जो व्यवहारिक ज्यादा होगा और सामाजिक कम । परन्तु नया जन्म किसी नये के होने को भी दर्शाता हैं । नयी नारी का जन्म नारी के अधिकारों में बढ़ोतरी करने वाला हैं । जब पहले उसके अधिकार सिमित थे तब भी वो प्रत्येक कामयाब पुरुष के पीछे का संबल थी । आज तो उसे और अधिक अधिकारों की प्राप्ती हो रही हैं । जाहिर हैं कि प्रत्येक प्ररुष की कामयाबी अब और भी सुनिश्चित हैं ।

आँखों में प्रेम, आवाज में मिठास, स्पर्श में कोमलता, हँसी में संगीत और मात्र दर्शन से सौन्दर्य का बोध करा देने वाली नारी आज हर क्षेत्र में दृष्टिगोचर होती

हैं । उसके सैंडिलों की खट-खट अब हर ऑफिस में गुँजती हैं । हालाकि ये ऑफिस अब आर्थिक लक्ष्यों और राजनितिक दॉवपेचों के रेगिस्तान बन चुके हैं परन्तु एक मात्र नारी के वंहा होने से हमें इन ऑफिसों के रुखेपन का अहसास नही होता हैं । हालाकि प्रारंभिक संकेत कुछ ज्यादा अच्छे नही भी हो सकते हैं परन्तु नारी के प्राकृतिक गुण, स्वभाव अंतत इन्हे पुरी तरह से बुध्दीमानी के बंजर रेगिस्तान बन जाने से रोक ही लेगें । ज्योतिष जैसे जटील क्षेत्र में भी महिलायें अपनी उपस्थिति को दर्शाने लगी हैं । हमारे देश में कई एसी महिलायें हैं जो ज्योतिष का कार्य करती हैं । पुरुष से विपरित स्वभाव होने के कारण ये महिलायें ज्योतिष के कई एसे पहलुओं को छुती हैं जिसे पुरुष ज्योतिषि साधारणयता अनदेखा करते रहते हैं । प्रश्न कुण्डली महिला ज्योतिषियों का पसंदीदा विषय हैं । कांकेर छत्तीसगढ़ की गीता शर्मा हो याँ कोटा राजस्थान की प्रमीला गुप्ता दोनो ही प्रश्न कुण्डली से फलादेश करने की माहिर हैं । हालाकि हम, दोनो के विश्लेषण करने की पध्दती देखें, तो दोनो जुदा जुदा तरिका अपनाती हैं परन्तु फिर भी दोनो ही अपने काम की माहिर मानी जाती हैं । मुबंई की सुशीला गोलानी टैरेट कार्ड की विशेषज्ञ मानी जाती हैं । अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान होने की वजह से ये टैरेट कार्ड की बारिकियों को बखूबी समझ पाती हैं और अपने फलादेश के लिये चर्चित हैं ।

कहा जाता हैं कि कभी जब खगोलविज्ञान का विकास नही हुआ था, जिसे आज हम एस्ट्रोनॉमी के नाम से जानते हैं । तब ये ज्योतिष शास्त्र का एक अंग हुआ करता था । इसके विशेषज्ञ, जो उस जमाने में पुरोहितगण कहलाया करते थे । इसके माध्यम से मानवीय कष्टों का निदान सुझाया करते थे । फिर बाद में मिस्त्र और बेबीलोन में कृषि कार्य के लिये इसका और अधिक विकास हुआ और खगोल विज्ञान के नाम पर अपनी अलग पहचान बनाता हुआ, ये ज्योतिष शास्त्र से अलग हो गया । फिर विज्ञान और खगोल की खोजों ने ज्योतिष को नेपथ्य में धकेल दिया, परन्तु खगोल की बुनियाद ही ज्योतिष था इसलिये ये पुरी तरह से मिट ना सका और शनै शनै अपने अस्तित्व को संजोता रहा और आज ये विज्ञान के लिये ही चुनौती बन रहा हैं ।

बहरहाल आने वाले महिलाओं के युग में और नयी जन्म ले रही नारी से हम ये आशा कर सकते हैं कि वे ज्योतिष में भी अपना प्रभाव उत्पन्न करेगी और ज्योतिष से बरता जा रहा सौतेलापन, ज्योतिष में पनप रही विसंगतियाँ और ज्योतिष के नाम पर हो रही ठगी में सुधार लायेगी । निम्नलिखित महिला ज्योतिषियों से हम एसी आशा अवश्य करते हैं ।

गीता शर्मा : कांकेर की रहने वाली गीता शर्मा ज्योतिष का बहुत ज्ञान रखती हैं और सबसे बड़ी आपकी जो विशेषता रही हैं वो हैं पंचाग की जटील गणनाऐं करना । आप राष्ट्रीय स्तर पर पंचाग का प्रकाशन करती हैं और इस पुरुषोचित क्षेत्र में महिला होकर भी हर प्रकार से खरी उतरती हैं । बहुत ही जिम्मेदारी से वे अपने ज्योतिष संबंधी कार्य को निंरतर करती रहती हैं ।

प्रमीला गुप्ता : कोटा राजस्थान की रहने वाली प्रमीला गुप्ता सारे देश में जंहा भी सम्मेलन होते हैं आप अवश्य जाती हैं और ज्योतिष की ताजा गतिविधियों की खूब जानकारी रखती हैं वैसे आप स्वंय प्रश्न कुण्डली की जानकार हैं । ज्योतिष के प्रचार प्रसार में आप बढ़चढ़कर हिस्सा लेती हैं और ज्योतिष के प्रति समर्पित हैं ।

अमिता कदम : मुबंई की रहने वाली अमिता कदम ज्योतिष के विशाल जगत में अपना स्थान बनाने के लिये प्रयासरत हैं । मुबंई में ज्योतिष का अपना एक स्कूल चलाती हैं और नये ज्योतिष सीखने वालों की भरपूर मदद करती हैं । ज्योतिष के प्रति जिज्ञासा से भरी अमिता कदम आज भी ज्योतिष में से कुछ ना कुछ सीखने का प्रयास करती रहती हैं ।

सुशीला गोलानी : मुबंई की रहने वाली सुशीला गोलानी 'टैरट कार्ड' की जानकार मानी जाती हैं । इस क्षेत्र में उनकी बहुत प्रसिध्दी हैं, इस विदेशी ज्योतिष विद्या को वो कैसे भारतीय ज्योतिष से मिलाकर फलप्रद बनाती हैं यही उनकी विशेषता हैं । मंच पर वे जब ज्योतिष पर धाराप्रवाह अग्रेंजी बोलती हैं तो उनके ज्योतिष ज्ञान का पता सहज ही चलता हैं ।

सुनीता झा : मुंबई की रहने वाली सुनीता झा 'लाल किताब' का अध्यन कर चुकी हैं और अब वे केपी पध्दती पर पकड़ बनाने में प्रयासरत हैं । आप इस बात से बहुत क्षुब्ध हैं कि प्रतिभाओं का शोषण होता हैं और उन्हे विकसित होने का मौका नही दिया जाता हैं । बहरहाल ज्योतिष के लिये कार्य करने की उनमें बहुत उर्जा हैं और वे समर्पित भी हैं ।

निति चतुर्वेदी : कोटा की रहने वाली निति चतुर्वेदी वास्तु की विशेषज्ञा मानी जाती हैं और विभिन्न कपंनियाँ इनसे वास्तु के विषय में सुझाव लेती हैं । आप ज्योतिष के प्रति बहुत सवेंदनशील हैं और चाहती हैं कि इसका उचित उपयोग हो और समाज में इसका लाभ प्रकट हो । जो सही मायनों में इसके ज्ञाता है। उनका सम्मान हों और क्षमताओं सही आंकलन हो ।

डॉ अंजना जोशी : अंजना जोशी हस्त रेखाओं का विशेष अध्यन करती हैं और वास्तु तथा कुण्डली की भी विशेषज्ञा हैं । आप कहती हैं कि बदलते समय के साथ हमारे शरीर के लक्षण हमें आने वाले समय अथवा घटनाओं का संकेत देते हैं । इसी परिप्रेक्ष्य में हस्त रेखाऐं भी संकेत देती हैं । हथेली में छोटी मोटी रेखाऐ प्रकट होकर बताती हैं कि अब क्या होने की संभावना हैं ।

ब्रह्मचारिणी वीना जैन : इन्दौर की रहने वाली वीना जैन असल में एक साध्वी हैं और आश्रम में रहती हैं । आप महिलाओं के प्रति विशेष संवदनशील हैं और महिलाओं की ही सहुलियत के लिये इन्हौने 'महिला वास्तु' पर विशेष अध्यन किया हैं । इनका मानना हैं कि अगर महिलायें थोड़ा इसे अपनाऐं तो घर की कितनी ही शारीरिक और मानसिक परेशानियों से बच सकती हैं । हालाकि वीना जैन रमल ज्योतिष और अंक ज्योतिष पर भी खासा अध्यन कर चुकी हैं ।

इसके अलावा भारती आनंद, डॉ पुष्पा, ईन्द्रा दुबे, मालिनी कत्रु, श्वेता बरेड़िया, उर्वशी बन्धु, श्वेता मौत्री, सीमा रेजी ईत्यादि एसी महिलायें हैं, जिन्हौने ज्योतिष को एक विशेष आयाम दिया हैं और सिध्द किया हैं कि वे सामाजिक भावनाओं और सवंदनाओं को अच्छे से समझ सकती हैं । इसे वे ज्योतिष के माध्यम से समस्या बनने से रोक भी सकती हैं । जो भी हो, ज्योतिष जगत की इन विभूतियों को महिला दिवस के दिन हमारी शुभ कामनाऐं और बधाई ।